हिंदुस्तान 02/03/2022

सीएसए विवि में 10 मार्च से होंगे ऑफलाइन एग्जाम

सीएसए की सेमेस्टर परीक्षाएं 10 मार्च से होंगी। रजिस्ट्रार डॉ. सीएल मौर्य ने बताया कि परीक्षा को ऑफलाइन माध्यम से कराया जाएगा। अभी तक कोरोना संक्रमण के कारण मिडटर्म परीक्षा को ऑनलाइन माध्यम से कराया गया था। मगर अब छात्र कैम्पस में आ गए हैं तो ऑफलाइन परीक्षा ही कराई जाएगी।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्षः13 | अंकः38 | देहरादून, मंगलवार, 01 मार्च, 2022 | पृष्ठः08

जायद में मक्का की खेती कर कमाएं लाभ

अनिल मिश्रा (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के मक्का अभिजनक डा० हरिश्चन्द्र सिंह एवं डा० एचजी प्रकाश (पूर्व निदेशक शोध) के अनुसार अनाज वाली फसलों में मक्का सबसे महत्वपूर्ण फसल है यह फसल तीनों सीजन में रबी, खरीफ, जायद में उगाई जाने वाली एकमात्र खाद्यान्न फसल है प्रतिदिन प्रति हेक्टेयर उत्पादन के लिहाज से इसके बराबर कोई दूसरी फसल नहीं है उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि राई, सरसो, सब्जी मटर, आलू आदि की कटाई के उपरान्त खाली हुए खेत में जायद की मक्का की खेती आसानी से की जा सकती है किसान खाली खेतों में मक्का की उपयुक्त प्रजातियों की बोआई कर अच्छी कमाई कर सकते हैं डॉ सिंह ने बताया की जायद मक्का की बुवाई 20 मार्च तक किसान भाई कर सकते हैं मक्के की सभी प्रजातियां 80 से 110 दिन में पक जाती हैं जिससे आगामी खरीफ सीजन में धान, अरहर, मक्का, खरीफ की सब्जियां दलहन व तिलहन की खेती आसानी से कर सकते हैं मक्का के लिए हल्की दोमट से लेकर बलुई दोमट भूमि जल निकास वाली जमीन जिसमें वायु संचार आसानी से हो सके उपयुक्त है मक्का का उत्पादन उसकी प्रजाति व किस्म के ऊपर काफी हद तक निर्भर करता है बीते सालों में विश्वविद्यालयों द्वारा कई उन्नतशील किस्मो का विकास किया गया है इनसे मक्के का औसत उत्पादन प्रति हेक्टेयर 65 से 70 कुन्तल तक प्राप्त हो सकता है संकुल प्रजातियों से 30 से 40 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की उपज प्राप्त हो सकती है उन्होंने मक्का की उर्वरक के बारे में बताया कि नाइट्रोजन फास्फोरस पोटाश, जिंक की पूरी मात्रा बोआई के समय लाइनों में दे देनी चाहिए।

Sign in to edit and save changes to this file.

com/epaper देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश @janexpressnews

अश्लील कंटेंट के खिलाफ होगी सख्त कार्रवाई... 12

सपा-बसपा नहीं चाहते यूपी का विकासः मुख्यमंत्री 05

जन एक्सप्रेस

लखनऊ
वर्षः 13 | अंकः 139
मूल्यः 3.00/-
पेजः 12
लखनऊ | बुधवार | 02 मार्च, 2022

'मक्का' तीनों सीजन में उगाई जाने वाली एक मात्र खाद्यान्न फसल

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चन्द्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी. आर. सिंह के निर्देश के क्रम में मंगलवार को विश्वविद्यालय के मक्का अभिजनक डा. हरिश्चन्द्र सिंह व पूर्व निदेशक शोध डा. एच. जी. प्रकाश के अनुसार अनाज वाली फसलों में मक्का सबसे महत्वपूर्ण फसल है।

उन्होंनें बताया कि यह फसल तीनों सीजन में रबी, खरीफ, जायद में उगाई जाने वाली एकमात्र खाद्यान्न फसल है। प्रतिदिन प्रति हेक्टेयर उत्पादन के लिहाज से इसके बराबर कोई दूसरी फसल नहीं है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि राई, सरसो, सब्जी मटर, आलू आदि की कटाई के उपरान्त खाली हुए खेत में जायद की मक्का खेती आसानी से की जा सकती है। किसान खाली खेतों में मक्का की उपयुक्त प्रजातियों की बोआई कर अच्छी कमाई कर सकते हैं। डॉ सिंह ने बताया की जायद मक्का की बुवाई 20 मार्च तक किसान भाई कर सकते हैं। मक्के की सभी प्रजातियां 80 से 110 दिन में पक जाती हैं। जिससे आगामी खरीफ सीजन में धान, अरहर, मक्का, खरीफ की सब्जियां दलहन व तिलहन की खेती आसानी से कर सकते है । मक्का के लिए हल्की दोमट से लेकर बलुई दोमट भूमि जल निकास वाली जमीन जिसमें वायुसंचार आसानी से हो सके उपयुक्त है। मक्का का उत्पादन उसकी प्रजाति व किस्म के ऊपर काफी हद तक निर्भर करता है। उन्होंनें बताया कि बीते सालों में विश्वविद्यालयों द्वारा कई उन्नतशील किस्मो का विकास किया गया है। इनसे मक्के का औसत उत्पादन प्रति हेक्टेयर 65 से 70 कुन्तल तक प्राप्त हो सकता है। संकुल प्रजातियों से 30 से 40 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की उपज प्राप्त हो सकती है। उन्होंने मक्का की उर्वरक के बारे में बताया कि नाइट्रोजन फास्फोरस, पोटाश, जिंक की पूरी मात्रा बोआई के समय लाइनों में दे देनी चाहिए। शेष नाइट्रोजन को दो भागों में पहली मात्रा फसल बुवाई के 20 दिन बाद, दूसरी 50 से 55 दिन बाद टाप ड्रेसिंग के रूप में दे देनी चाहिए।

वर्ष 16 अंक 60 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, बुधवार 02 मार्च 2022

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com पेज -8

'भाभीजी घर पर हैं' में विदिशा श्रीवास्तव होंगी नई अ

जायद में मक्का की खेती कर कमाए लाभः डॉ. हरिश्चन्द्र सिंह

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के मक्का अभिजनक डा. हरिश्चन्द्र सिंह एवं डा. एच. जी. प्रकाश (पूर्व निदेशक शोध) के अनुसार अनाज वाली फसलों में मक्का सबसे महत्वपूर्ण फसल है। यह फसल तीनों सीजन में रबी, खरीफ, जायद में उगाई जाने वाली एकमात्र खाद्यान्न फसल है। प्रतिदिन प्रति हेक्टेयर उत्पादन के लिहाज से इसके बराबर कोई दूसरी फसल नहीं है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि राई, सरसो, सब्जी मटर, आलू आदि की कटाई के उपरान्त खाली हुए खेत में जायद की मक्का की खेती आसानी से की जा सकती है। किसान खाली खेतों में मक्का की उपयुक्त प्रजातियों की बोआई कर अच्छी कमाई कर सकते हैं। डॉ सिंह ने बताया की जायद मक्का की बुवाई 20 मार्च तक किसान भाई कर सकते हैं मक्के की सभी प्रजातियां 80 से 110 दिन में पक जाती हैं। जिससे आगामी खरीफ सीजन में धान,अरहर , मक्का , खरीफ की सब्जियां दलहन व तिलहन की खेती आसानी से कर सकते हैं । मक्का के लिए हल्की दोमट से लेकर बलुई दोमट भूमि जल निकास वाली जमीन जिसमें वायुसंचार आसानी से हो सके उपयुक्त है। मक्का का उत्पादन उसकी प्रजाति व

किस्म के ऊपर काफी हद तक निर्भर करता है। बीते सालों में विश्वविद्यालयों द्वारा कई उन्नतशील किस्मों का विकास किया गया है। इनसे मक्के का औसत उत्पादन प्रति हेक्टेयर 65 से 70 कुन्तल तक प्राप्त हो सकता है। संकुल प्रजातियों से 30 से 40 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की उपज प्राप्त हो सकती है। उन्होंने मक्का की उर्वरक के बारे में बताया कि नाइट्रोजन फास्फोरस , पोटाश, जिंक की पूरी मात्रा बोआई के समय लाइनों में दे देनी चाहिए। शेष नाइट्रोजन को दो भागों में पहली मात्रा फसल बुवाई के 20 दिन बाद, दूसरी 50 से 55 दिन बाद टाप ड्रेसिंग के रूप में दे देनी चाहिए।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • बुधवार • 2 मार्च • 2022

किसान किसी भी सीजन में कर सकेंगे मक्का का उत्पादन

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

किसान मक्का की फसल का तीनों सीजन (रवी, खरीफ, जायद) में उत्पादन करके वेहतर लाभ कमा सकते हैं। राई सरसों, सब्जी आलू के खेत खाली होने पर मकाई की फसल की जा सकती है। मक्का की विकसित प्रजातियों की फसल करके किसान प्रति हेक्टेअर 65-70 कुंतल का उत्पादन कर सकता है। यह वात डा. हरिश्चंद्र सिंह ने वतायी है।

चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआर सिंह के निर्देश पर विश्वविद्यालय के मक्का वैज्ञानिक डा. हरिश्चन्द्र सिंह व डा. एचजी प्रकाश (पूर्व निदेशक शोध) ने वताया कि अनाज वाली फसलों में मक्का सवसे महत्वपूर्ण फसल है। यह फसल तीनों सीजन में रवी, खरीफ, जायद में उगाई जाने वाली एकमात्र खाद्यान्न फसल है। प्रति हेक्टेयर उत्पादन के लिहाज से इसके वरावर कोई दूसरी फसल नही है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि राई, सरसों, सब्जी मटर, आलू आदि की कटाई के उपरान्त खाली हुए खेत में जायद की मक्का की खेती आसानी से की जा सकती है। किसान खाली खेतों में मक्का की उपयुक्त प्रजातियों की वोआई कर अच्छी कमाई कर सकते हैं। डॉ. सिंह ने वताया की जायद मक्का की वुवाई 20 मार्च तक किसान कर सकते हैं।

मक्के की सभी प्रजातियां 80 से 110 दिन में पक जाती हैं। जिससे आगामी खरीफ सीजन में धान, अरहर, मक्का, खरीफ की सब्जियां दलहन व तिलहन की खेती आसानी से कर सकते हैं। मक्का के लिए हल्की दोमट से लेकर वलुई दोमट भूमि जल निकास वाली जमीन जिसमें वायुसंचार आसानी से हो सके उपयुक्त है। मक्का का उत्पादन उसकी प्रजाति व किस्म के ऊपर निर्भर करता है। मक्के का औसत उत्पादन प्रति हेक्टेयर 65 से 70 कुन्तल तक प्राप्त हो सकता है। संकुल प्रजातियों से 30 से 40 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की उपज प्राप्त हो सकती है।

उन्होंने मक्का की उर्वरक के वारे में वताया कि नाइट्रोजन फास्फोरस, पोटाश, जिंक की पूरी मात्रा वोआई के समय लाइनों में दे देनी चाहिए। शेष नाइट्रोजन को दो भागों में पहली मात्रा फसल वुवाई के 20 दिन वाद, दूसरी 50 से 55 दिन वाद टाप ड्रेसिंग के रूप में दे देनी चाहिए।

Sign in to edit and save changes to this file.

सत्यनिष्ठ, उत्कृष्ट

लोकनायक भारत

नई दिल्ली संस्करण वर्ष-01, अंक - 117 | राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र R.c.p. Licence No.- F2 (L-1) Press-2021 | बुधवार, 02 मार्च 2022 | पृष्ठ 12 | मूल्य 3 रु

For epaper→ www.loknayakbharat.com नई दिल्ली से प्रकाशित

जायद में मक्का की खेती कर कमाए लाभ : डॉ हरिश्चन्द्र

लोकनायक भारत न्यूज

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के मक्का अभिजनक डा . हरिश्चन्द्र सिंह एवं डा . एच . जी . प्रकाश (पूर्व निदेशक शोध) के अनुसार अनाज वाली फसलों में मक्का सबसे महत्वपूर्ण फसल है। यह फसल तीनों सीजन में रबी, खरीफ, जायद में उगाई जाने वाली एकमात्र खाद्यान्न फसल है।

प्रतिदिन प्रति हेक्टेयर उत्पादन के लिहाज से इसके बराबर कोई दूसरी फसल नहीं है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि राई, सरसो, सब्जी मटर, आलू आदि की कटाई के उपरान्त खाली हुए खेत में जायद की मक्का की खेती आसानी से की जा सकती है। किसान खाली खेतों में मक्का की उपयुक्त प्रजातियों की बोआई कर अच्छी कमाई कर सकते हैं। डॉ सिंह ने बताया की जायद मक्का की बुवाई 20 मार्च तक किसान भाई कर सकते हैं।मक्के की सभी प्रजातियां 80 से 110 दिन में पक जाती हैं। जिससे आगामी खरीफ सीजन में धान,अरहर , मक्का , खरीफ की सब्जिय्रां दलहन व तिलहन की खेती आसानी से कर सकते हैं । मक्का के लिए हल्की दोमट से लेकर बलुई दोमट भूमि जल निकास वाली जमीन जिसमें वायुसंचार आसानी से हो सके उपयुक्त है। मक्का का उत्पादन उसकी प्रजाति व किस्म के ऊपर काफी हद तक निर्भर करता है। बीते सालों में विश्वविद्यालयों द्वारा कई उन्नतशील किस्मो का विकास किया गया है। इनसे मक्के का औसत उत्पादन प्रति हेक्टेयर 65 से 70 कुन्तल तक प्राप्त हो सकता है। संकुल प्रजातियों से 30 से 40 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की उपज प्राप्त हो सकती है। उन्होंने मक्का की उर्वरक के बारे में बताया कि नाइट्रोजन फास्फोरस , पोटाश, जिंक की पूरी मात्रा बोआई के समय लाइनों में दे देनी चाहिए। शेष नाइट्रोजन को दो भागों में पहली मात्रा फसल बुवाई के 20 दिन बाद, दूसरी 50 से 55 दिन बाद टाप ड्रेसिंग के रूप में दे देनी चाहिए।